श्री दधीचि वंश वृक्ष

अर्थवानन्दन त्यागमूर्ती
महर्षि दधीचि

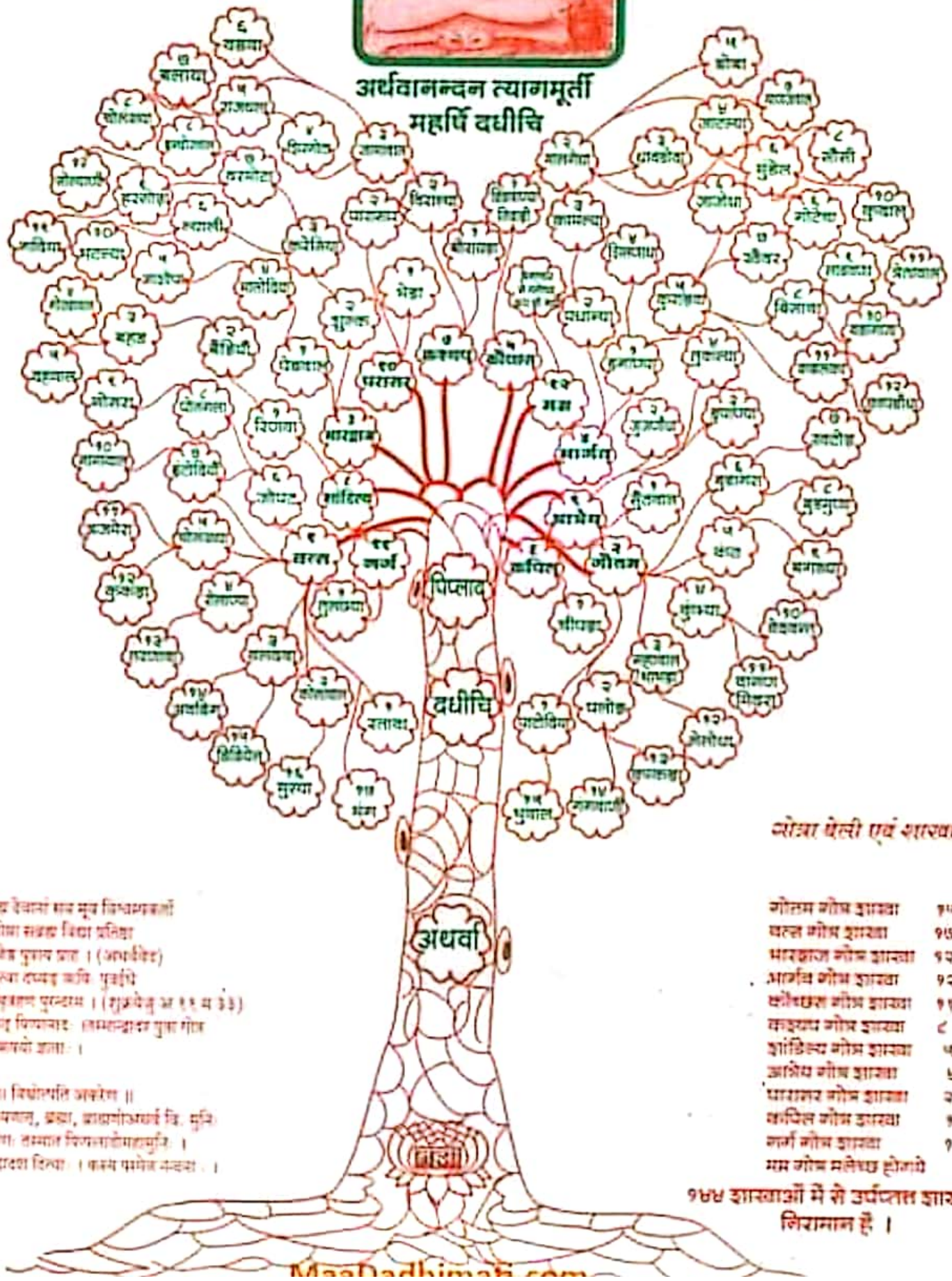

१. [illegible] (अथर्ववेद)
२. ॐ तमुत्वा दध्यङ् ऋषि पुत्रईधे अथर्वणः वृत्रहणं पुरन्दरम् । (शुक्लयजु अ ११ म ३३)
३. दधीचाद् पिप्पलादः [illegible] गोत्र प्रवर्तकाः [illegible] ।

॥ [illegible] ॥
[illegible]

गोत्र श्रेणी एवं शाखायें

गौतम गोत्र शाखा	१५
वत्स गोत्र शाखा	१७
भारद्वाज गोत्र शाखा	१२
भार्गव गोत्र शाखा	१२
कौशिक गोत्र शाखा	११
कश्यप गोत्र शाखा	८
शांडिल्य गोत्र शाखा	५
आत्रेय गोत्र शाखा	५
पाराशर गोत्र शाखा	२
कपिल गोत्र शाखा	१
गर्ग गोत्र शाखा	१

मम गोत्र मलेच्छ होगये

१४४ शाखाओं में से उपर्युक्त शाखायें विराजमान हैं ।

MaaDadhimati.com
MaaDadhimati.com
Scanned with CamScanner

सृष्टि क्रम में दाधीच (दायमा) ब्राह्मणों की उत्पत्ति दाधीच मात्र के लिए गर्वानुभूति का विषय है। श्री मन्नारायण भगवान द्वारा सर्वप्रथम नाभिकमल से ब्रह्मा को प्रकट किया गया। अथर्ववेद निर्माता अथर्व ब्रह्माजी के ज्येष्ठ पुत्र हुए। महर्षि दाधीच (दध्यड्) उन्हीं अथर्वा के पुत्र माने जाते हैं। दधीचि से पिप्पलाद मुनि उत्पन्न हुए जिनके 12 पुत्र गोत्र-प्रवर्तक ऋषि हुए। इन ऋषियों के 144 पुत्र हुए जो शाखाएं या नख कहलाए। वर्तमान में 88 शाखाएं समाज में विद्यमान हैं। महर्षि दाधीच ने देवताओं को असुरों से बचाने के लिए अपना जीवन त्याग कर ब्राह्मणत्व की मिसाल कायम की।

Scanned with CamScanner

दाधीच ब्राह्मण समाज के गोत्र, शाखाएँ तथा कुलदेवी

| Dadhich Brahmin Gotra List

दाधीच ब्राह्मण महर्षि दधीचि के वंशज हैं। दाहिम क्षेत्र से मूल उत्पत्ति होने के कारण इन्हें दाहिमा के रूप में भी जाना जाता है। ये मारवाड़ क्षेत्र के ब्राह्मणों के छह समूहों में से एक हैं इस समूह में दाधीच के अलावा अन्य हैं -गौड़, पारीक, सारस्वत, सिखवाल और खंडेलवाल।

दाधीच समाज के गोत्र व शाखाएं :

दाधीच ब्राह्मणों में ग्यारह गोत्र हैं जिनका नाम उन्हें ऋषियों के नामों से मिला है। ये गोत्र इस प्रकार हैं –

गौतम	वत्स
कोच्छस	भार्गव
अत्रेय	कश्यप
कपिल	गर्ग

Scanned with CamScanner

इन गोत्रों में कई शाखाएं (सांख / खांप) हैं । इस ब्राह्मण समाज की खांपों के नाम राजस्थान के नागौर जिले में उनके प्राचीन गाँवों या क्षेत्रों के नाम पर रखा गया है जो कि अधिकतर 'गोठ-मांगलोद' गाँवों के आस-पास है। गोठ-मांगलोद में ही इस समाज की कुलदेवी दधिमथी माता का धाम है। ये शाखाएं इस प्रकार हैं –

Scanned with CamScanner

	गौतम
Patodhya	Palod
Bhabhda	Kumbhya
Khatod	Budsuna
Vedvant	Vanansidr
Kakda	Gagvani
Budadhara	
	वत्स
Mang	Koliwal
Baldava	Rolanya
Jhopat	Intodhya
Nosara	Namaval
Ajmera	Avdig
Musya	Didel

Scanned with CamScanner

Pedwal

Malodhya

Lyali

Hulsura

Kudal

Vetaval

Mundel

Sosi

Shilnodhya

Jajodhya

Badagana

Bisawa

भारद्वाज

Asopa

Barmota

Karesiya

Solyani

कोच्छस

Gothecha

Jatalya

Dobha Acl

Mandolya

भार्गव

Inaniya

Prathanya

Kapdodhy

Kuradaya

Scanned with CamScanner

शाण्डिल्य

Dahval

Bahad

Bediya

Gothval

अत्रेय

Dubanya

Sukalya

Jujnodhya

कश्यप

Dorolya

Balaya

Cholkhya

Shirgota

Rajthala

Borayada

पाराशर

Bheda Vyas

Parasara

कपिल

गर्ग

Chipda

Tulchya

Scanned with CamScanner

दाहिमा (दाधीच) ब्राह्मणों की कुलदेवी दधिमथी माता है। राजस्थान के नागौर जिले की जायल तहसील में गोठ – मांगलोद गाँवो के समीप दधिमथी माता का भव्य मन्दिर विद्यमान है।

Scanned with CamScanner

दाहिमा (दधीचक) ब्राह्मणों की कुलदेवी को समर्पित यह देव भवन भारतीय स्थापत्य एवं मूर्तिकला का गौरव है। श्वेत पाषाण से निर्मित यह शिखरबद्ध मंदिर पूर्वाभिमुख है तथा महामारु (Mahamaru) शैली के मंदिर का श्रेष्ठ उदाहरण है। वेदी की सादगी जंघा भाग की रथिकाओं में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, मध्य भाग में रामायण दृश्यावली एवं शिखर प्रतिहारकालीन परम्परा के अनरूप है।

Scanned with CamScanner